

Chapter उन्नीस

दावानल पान

इस अध्याय में बतलाया गया है कि किस प्रकार कृष्ण ने मुञ्जारण्य में लगी महाग्नि से गौवों तथा ग्वालों की रक्षा की।

एक दिन सारे ग्वालबाल खेल में मग्न हो गये तो गौवें घने जंगल में चरने निकल गईं। सहसा दावाग्नि भड़क उठी तो लपटों से बचने के लिए गौवों ने मूँज के कुंज में जाकर शरण ली। जब ग्वालबालों को अपनी गाँँ न दिखाई दीं, तब वे उनके पदचिह्नों और उनसे रौँदने से या दाँतों से तोड़े

जाने से घास के तिनकों तथा दूसरे पौधों से बनी लकीर का पीछा करते हुए तलाश में निकल पड़े। अन्त में गौवें उन्हें मुंजवन में मिलीं और उन्होंने उन्हें वहाँ से हटा लिया। किन्तु तब तक आग जोर पकड़ चुकी थी और उससे गौवों तथा बालकों को खतरा पैदा हो गया था। इस तरह बालकों ने योगेश्वर कृष्ण की शरण ली। कृष्ण ने उनसे आँखें मूँदने को कहा। जब उन्होंने ऐसा किया, तो श्रीकृष्ण ने क्षण-भर में उस भयंकर दावाग्नि को निगल लिया और उन सबों को भाण्डीर वृक्ष के पास ले आये जिसका उल्लेख पिछले अध्याय में किया गया है। इस योगशक्ति के अद्भुत चमत्कार को देखकर ग्वालबालों ने सोचा कि कृष्ण अवश्य ही देवता हैं अतः वे उनकी प्रशंसा करने लगे। इसके बाद सभी लोग घर लौट आये।

श्रीशुक उवाच

क्रीडासक्तेषु गोपेषु तद्गावो दूरचारिणीः ।

स्वैरं चरन्त्यो विविशुस्तृणलोभेन गह्वरम् ॥ १ ॥

शब्दार्थ

श्री-शुकः उवाच—श्री शुकदेव गोस्वामी ने कहा; क्रीडा—खेल में; आसक्तेषु—पूरी तरह लीन; गोपेषु—ग्वालबालों में; तद्-गावः—उनकी गौवें; दूर-चारिणीः—दूर तक घूमने वाली; स्वैरम्—स्वतंत्र रूप से; चरन्त्यः—चरती हुई; विविशुः—घुसीं; तृण—घास के; लोभेन—लालच से; गह्वरम्—घने जंगल में।

शुकदेव गोस्वामी ने कहा : जब ग्वालबाल खेलने में पूरी तरह मग्न थे तो उनकी गौवें दूर चली गईं। अधिक घास के लोभ में तथा कोई उनकी देखभाल करनेवाला न होने से वे घने जंगल में घुस गईं।

अजा गावो महिष्यश्च निर्विशन्त्यो वनाद्वनम् ।

ईषीकाटवीं निर्विविशुः क्रन्दन्त्यो दावतर्षिताः ॥ २ ॥

शब्दार्थ

अजाः—बकरियाँ; गावः—गौवें; महिष्यः—भैंसे; च—तथा; निर्विशन्त्यः—प्रवेश करतीं; वनात्—एक जंगल से; वनम्—दूसरे जंगल को; ईषीका-अटवीम्—मूँज के जंगल में; निर्विविशुः—प्रविष्ट हुईं; क्रन्दन्त्यः—चिल्लाती हुईं; दाव—जंगल की अग्नि के कारण; तर्षिताः—प्यासी।

विशाल जंगल के एक भाग से दूसरे भाग में जाते हुए बकरियाँ, गौवें तथा भैंसें अन्ततः मूँज से आच्छादित क्षेत्र में घुस गईं। पास के जंगल की अग्नि की गर्मी से उन्हें प्यास लग पड़ी और वे कष्ट के कारण रँभाने लगीं।

तेऽपश्यन्तः पशून्गोपाः कृष्णरामादयस्तदा ।
जातानुतापा न विदुर्विचिन्वन्तो गवां गतिम् ॥ ३ ॥

शब्दार्थ

ते—वे; अपश्यन्तः—न देखते हुए; पशून्—पशुओं को; गोपाः—ग्वालबाल; कृष्ण-राम-आदयः—कृष्ण, राम इत्यादि;
तदा—तब; जात-अनुतापाः—पश्चात्ताप अनुभव करते हुए; न विदुः—नहीं जान पाये; विचिन्वन्तः—ढूँढ़ते हुए; गवाम्—गौवों
को; गतिम्—रास्ता।

गौवों को सामने न देखकर, कृष्ण, राम तथा उनके ग्वालमित्रों को सहसा अपनी
असावधानी पर पछतावा हुआ। उन बालकों ने चारों ओर ढूँढ़ा किन्तु यह पता न लगा पाये कि वे
कहाँ चली गई हैं।

तृणैस्तत्खुरदच्छिन्नैर्गोष्वदैरङ्कितैर्गवाम् ।
मार्गमन्वगमन्सर्वे नष्टाजीव्या विचेतसः ॥ ४ ॥

शब्दार्थ

तृणैः—तिनकों से; तत्—उन गायों के; खुर—खुरों से; दत्—तथा दाँतों से; छिन्नैः—तोड़े गये; गोः-पदैः—गायों के खुरों के
निशानों से; अङ्कितैः—पृथ्वी पर बने; गवाम्—गायों के; मार्गम्—रास्ता; अन्वगमन्—पीछा किया; सर्वे—सबों ने; नष्ट-
आजीव्याः—अपनी जीविका के नष्ट हो जाने की; विचेतसः—चिन्ता में।

तब बालकों ने गौवों के खुरों के चिन्हों तथा उनके खुरों तथा दाँतों से तोड़ी गई घास के
तिनकों को देखकर उनके रास्ते का पता लगाना शुरू किया। सारे ग्वालबाल अत्यधिक चिन्तित
थे क्योंकि वे अपनी जीविका का साधन खो चुके थे।

मुञ्जाटव्यां भ्रष्टमार्गं क्रन्दमानं स्वगोधनम् ।
सम्प्राप्य तृषिताः श्रान्तास्ततस्ते सन्न्यवर्तयन् ॥ ५ ॥

शब्दार्थ

मुञ्जा-अटव्याम्—मुञ्जा वन में; भ्रष्ट-मार्गम्—अपना रास्ता खोकर; क्रन्दमानम्—चिल्लाती हुई; स्व—अपनी; गो-धनम्—गौवें
(तथा अन्य पशु); सम्प्राप्य—पाकर; तृषिताः—प्यासे; श्रान्ताः—तथा थके; ततः—तब; ते—वे बालक; सन्न्यवर्तयन्—उन
सबों को बहोर लाये।

अन्त में ग्वालबालों को अपनी बहुमूल्य गौवें मुञ्जा वन में मिलीं जो अपना रास्ता भटक
जाने से चिल्ला रही थीं। तब प्यासे तथा थके-माँदे ग्वालबाल उन गौवों को घर के रास्ते पर
वापस ले आये।

ता आहूता भगवता मेघगम्भीरया गिरा ।
स्वनाम्नां निनदं श्रुत्वा प्रतिनेदुः प्रहर्षिताः ॥ ६ ॥

शब्दार्थ

ताः—वे गौवें; आहूताः—बुलाई गई; भगवता—भगवान् द्वारा; मेघ-गम्भीरया—बादल की तरह गम्भीर; गिरा—वाणी से; स्व-नाम्नाम्—अपने अपने नामों की; निनदम्—ध्वनि; श्रुत्वा—सुनकर; प्रतिनेदुः—उत्तर दिया; प्रहर्षिताः—अत्यधिक हर्षित होकर।

भगवान् ने उन पशुओं को गरजते बादल की तरह गूँजती वाणी से पुकारा। अपने-अपने नामों की ध्वनि सुनकर गौवें अत्यधिक हर्षित हुईं और हुंकार भर कर भगवान् को उत्तर देने लगीं।

ततः समन्ताद्दधूमकेतु-

यदृच्छयाभूत्क्षयकृद्ग्नौकसाम् ।

समीरितः सारथिनोल्बणोल्मुकै-

विलेलिहानः स्थिरजङ्गमान्महान् ॥ ७ ॥

शब्दार्थ

ततः—तब; समन्तात्—चारों ओर; दधु-धूमकेतुः—भीषण जंगल की अग्नि; यदृच्छया—सहसा; अभूत्—प्रकट हुई; क्षय-कृत्—नष्ट करने पर तुली; वन-ओकसाम्—जंगल में उपस्थित प्राणियों को; समीरितः—हाँकी गई; सारथिना—सारथी तुल्य हवा द्वारा; उल्बण—भयानक; उल्मुकैः—उल्का जैसी चिनगारियों से युक्त; विलेलिहानः—चाटती हुई; स्थिर-जङ्गमान्—समस्त चर तथा अचर प्राणियों को; महान्—महान।

सहसा चारों दिशाओं में महान् दावाग्नि प्रकट हुई जिससे जंगल के समस्त प्राणियों के नष्ट होने का संकट उत्पन्न हो गया। सारथी तुल्य वायु, अग्नि को आगे बढ़ाती जा रही थी और चारों ओर भयानक चिनगारियाँ निकल रही थीं। निस्सन्देह, इस महान् अग्नि ने अपनी ज्वालाओं रूपी जिह्वाओं को समस्त चल और अचर प्राणियों की ओर लपलपा दिया था।

तात्पर्य : अभी कृष्ण, बलराम तथा ग्वालबाल अपनी गौवें लेकर घर लौटने ही वाले थे कि जो दावाग्नि लगी थी वह काबू के बाहर हो गई और उसने उन सबों को घेर लिया।

तमापतन्तं परितो दवाग्निं

गोपाश्च गावः प्रसमीक्ष्य भीताः ।

ऊचुश्च कृष्णं सबलं प्रपन्ना

यथा हरिं मृत्युभयार्दिता जनाः ॥ ८ ॥

शब्दार्थ

तम्—उस; आपतन्तम्—उन पर आन पड़ी हुई; परितः—चारों ओर; दधु-अग्निम्—जंगल की आग को; गोपाः—ग्वालबालों ने; च—तथा; गावः—गौवों ने; प्रसमीक्ष्य—ठीक से देखकर; भीताः—डरे हुए; ऊचुः—सम्बोधन किया; च—तथा; कृष्णम्—कृष्ण को; स-बलम्—तथा बलराम को; प्रपन्नाः—शरणागत; यथा—जिस प्रकार; हरिम्—भगवान् को; मृत्यु—मृत्यु के; भय—भय से; अर्दिताः—पीड़ित; जनाः—व्यक्ति।

जब गौवों तथा ग्वालबालों ने चारों ओर से दावाग्नि को अपने ऊपर आक्रमण करते देखा तो वे बहुत डर गये। अतः वे रक्षा के लिए कृष्ण तथा बलराम के निकट गये जिस तरह मृत्यु-भय से विचलित लोग भगवान् की शरण में जाते हैं। उन बालकों ने उन्हें इस प्रकार से सम्बोधित किया।

कृष्ण कृष्ण महावीर हे रामामोघ विक्रम ।
दावाग्निना दह्यमानान्प्रपन्नांस्त्रातुमर्हथः ॥ ९ ॥

शब्दार्थ

कृष्ण कृष्ण—हे कृष्ण, हे कृष्ण; महा-वीर—हे अत्यन्त बलशाली; हे राम—हे राम; अमोघ-विक्रम—अमोघ शक्तिवाले; दाव-अग्निना—जंगल की आग से; दह्यमानान्—जलते हुआओं को; प्रपन्नान्—शरणागतों को; त्रातुम् अर्हथः—कृपया बचायें।

[ग्वालबालों ने कहा] हे कृष्ण, हे कृष्ण, हे महावीर, हे राम, हे अमोघ शक्तिशाली, कृपा करके अपने उन भक्तों को बचायें जो जंगल की इस अग्नि से जलने ही वाले हैं और आपकी शरण में आये हैं।

नूनं त्वद्बान्धवाः कृष्ण न चाहन्त्यवसादितुम् ।
वयं हि सर्वधर्मज्ञ त्वन्नाथास्त्वत्परायणाः ॥ १० ॥

शब्दार्थ

नूनम्—अवश्य ही; त्वत्—आपके; बान्धवाः—मित्रगण; कृष्ण—हमारे प्यारे कृष्ण; न—कभी नहीं; च—और; अर्हन्ति—योग्य हैं; अवसादितुम्—विनष्ट होने के; वयम्—हम; हि—यही नहीं; सर्व-धर्म-ज्ञ—समस्त जीवों को भलीभाँति जाननेवाले; त्वत्-नाथाः—आपको अपने स्वामी के रूप में पाकर; त्वत्-परायणः—आपकी ही भक्ति में लगे हुए।

कृष्ण! निस्सन्देह आपके अपने मित्रों को तो नष्ट नहीं होना चाहिए। हे समस्त वस्तुओं की प्रकृति को जाननेवाले, हमने आपको अपना स्वामी मान रखा है और हम आपके शरणागत हैं।

श्रीशुक उवाच

वचो निशम्य कृपणं बन्धूनां भगवान्हरिः ।
निमीलयत मा भैष्ट लोचनानीत्यभाषत ॥ ११ ॥

शब्दार्थ

श्री-शुकः उवाच—श्री शुकदेव गोस्वामी ने कहा; वचः—वचन; निशम्य—सुनकर; कृपणम्—दयनीय; बन्धूनाम्—अपने मित्रों के; भगवान्—भगवान्; हरिः—हरि ने; निमीलयत—बन्द कर लो; मा भैष्ट—मत डरो; लोचनानि—आँखों को; इति—इस प्रकार; अभाषत—कहा।

शुकदेव गोस्वामी ने कहा : अपने मित्रों के ऐसे दयनीय वचन सुनकर भगवान् कृष्ण ने उनसे कहा : “तुम लोग, बस अपनी आँखें मूँद लो और डरो नहीं।”

तात्पर्य : इस श्लोक से कृष्ण तथा उनके शुद्ध भक्तों के बीच का सरल दिव्य सम्बन्ध स्पष्ट होता है। परम सत्य परम शक्तिमान भगवान् वास्तव में एक तरुण आनन्दमय ग्वालबाल हैं जिसका नाम कृष्ण है। भगवान् असल में तरुण हैं और उनकी प्रकृति खिलाड़ी की है। जब उन्होंने देखा कि उनके प्रिय मित्र दावाग्नि से भयभीत हो चुके हैं, तो उन्होंने उनसे इतना ही कहा कि तुम लोग अपनी आँखें बन्द कर लो और डरो मत। तब कृष्ण ने जो कुछ किया वह अगले श्लोक में बतलाया गया है।

तथेति मीलिताक्षेषु भगवानग्निमुल्बणम् ।

पीत्वा मुखेन तान्कृच्छ्राद्योगाधीशो व्यमोचयत् ॥ १२ ॥

शब्दार्थ

तथा—बहुत अच्छा; इति—ऐसा कहकर; मीलित—बन्द करते हुए; अक्षेषु—अपनी आँखें; भगवान्—भगवान्; अग्निम्—अग्नि को; उल्बणम्—भयानक; पीत्वा—पीकर; मुखेन—मुख से; तान्—उनको; कृच्छ्रात्—संकट से; योग-अधीशः—समस्त योगशक्ति के परम नियन्ता; व्यमोचयत्—उद्धार कर दिया।

बालकों ने उत्तर दिया “बहुत अच्छा” और तुरन्त ही उन्होंने अपनी आँखें बन्द कर लीं। तब समस्त योगशक्ति के स्वामी भगवान् ने अपना मुख खोला और उस भयानक अग्नि को निगलकर अपने मित्रों को संकट से बचा लिया।

तात्पर्य : ग्वालबाल अत्यधिक थकान, भूख तथा प्यास से त्रस्त थे और वे विकराल दावाग्नि से भस्म होने ही वाले थे। इस स्थिति का संकेत कृच्छ्रात् शब्द से मिल जाता है।

ततश्च तेऽक्षीण्युन्मील्य पुनर्भाण्डीरमापिताः ।

निशम्य विस्मिता आसन्नात्मानं गाश्च मोचिताः ॥ १३ ॥

शब्दार्थ

ततः—तब; च—तथा; ते—वे; अक्षीणि—अपनी आँखें; उन्मील्य—खोलते हुए; पुनः—फिर; भाण्डीरम्—भाण्डीर तक; आपिताः—ले गये; निशम्य—देखकर; विस्मिताः—चकित; आसन्—हुए; आत्मानम्—अपने आपको; गाः—गौवों को; च—तथा; मोचिताः—बचा लिया।

ग्वालबालों ने अपनी आँखें खोलीं तो यह देखकर चकित हुए कि न केवल उन्हें तथा गौवों को उस विकराल अग्नि से बचा लिया गया है अपितु वे भाण्डीर वृक्ष के पास वापस ला दिये गये हैं।

कृष्णस्य योगवीर्यं तद्योगमायानुभावितम् ।

दावाग्नेरात्मनः क्षेमं वीक्ष्य ते मेनिरेऽमरम् ॥ १४ ॥

शब्दार्थ

कृष्णस्य—कृष्ण की; योग-वीर्यम्—योगशक्ति; तत्—वह; योग-माया—माया की अन्तरंगा शक्ति द्वारा; अनुभावितम्—प्रभावित; दाव-अग्नेः—दावाग्नि से; आत्मनः—अपना; क्षेमम्—ऊँकार; वीक्ष्य—देखकर; ते—उन्होंने; मेनिरे—सोचा; अमरम्—देवता।

जब ग्वालबालों ने देखा कि भगवान् की अन्तरंगा शक्ति से प्रकट योगशक्ति द्वारा उन्हें दावाग्नि से बचाया जा चुका है, तो वे सोचने लगे कि कृष्ण अवश्य ही कोई देवता हैं।

तात्पर्य : वृन्दावन के ग्वालबाल कृष्ण को अपना एकमात्र मित्र तथा पूजनीय मानते थे। कृष्ण ने इन सबों के आनन्द को बढ़ाने के लिए अपनी योगशक्ति का प्रदर्शन किया और उन्हें उस भयानक दावाग्नि से बचा लिया।

ये ग्वालबाल किसी भी दशा में कृष्ण से अपनी आनन्दमयी एवं प्रेममयी मित्रता का परित्याग नहीं कर सकते थे। अतः उन्होंने जब उनकी यह असाधारण शक्ति देखी तो सोचा कि कृष्ण ईश्वर नहीं, अपितु शायद कोई देवता हैं। किन्तु कृष्ण उनके प्रिय मित्र थे अतः वे उन्हीं के समान स्तर पर थे। अतएव उन्होंने अपने आपको भी देवता तुल्य ही सोचा। इस तरह कृष्ण के ग्वालमित्र आनन्दविभोर हो उठे।

गाः सन्निवर्त्य सायाह्ने सहरामो जनार्दनः ।

वेणुं विरणयन्गोष्ठमगाद्गोपैरभिष्टुतः ॥ १५ ॥

शब्दार्थ

गाः—गौवें; सन्निवर्त्य—लौटाकर; साय-अह्ने—दोपहर बीत जाने के बाद; सह-रामः—बलराम सहित; जनार्दनः—श्रीकृष्ण; वेणुम्—अपनी वंशी; विरणयन्—विशेष ढंग से बजाते हुए; गोष्ठम्—ग्वालों के गाँव में; अगात्—गये; गोपैः—ग्वालबालों द्वारा; अभिष्टुतः—प्रशंसित होकर।

अब दोपहर ढल चुकी थी और बलराम सहित भगवान् कृष्ण ने गौवों को घर की ओर मोड़ा। अपनी वंशी को एक विशिष्ट ढंग से बजाते हुए कृष्ण अपने ग्वाल मित्रों के साथ गोपग्राम लौटे और ग्वालबाल उनके यश का गान कर रहे थे।

गोपीनां परमानन्द आसीद्गोविन्ददर्शने ।

क्षणं युगशतमिव यासां येन विनाभवत् ॥ १६ ॥

शब्दार्थ

गोपीनाम्—गोपियों के लिए; परम-आनन्दः—सर्वोच्च सुख; आसीत्—हुआ; गोविन्द-दर्शने—गोविन्द को देखने में; क्षणम्—एक क्षण; युग-शतम्—एक सौ युग; इव—सदृश; यासाम्—जिनके लिए; येन—जिसके (कृष्ण); विना—बिना; अभवत्—हो गया।

गोविन्द को घर आते देखकर तरुण गोपियों को अत्यन्त आनंद प्राप्त हुआ क्योंकि उनकी संगति के बिना एक क्षण भी उन्हें सौ युगों के समान प्रतीत हो रहा था।

तात्पर्य : ग्वालबालों को दावाग्नि से बचाने के बाद कृष्ण ने अपने विरह की अग्नि में जलती हुई गोपियों को बचाया। श्रीमती राधारानी इत्यादि गोपियों के मन में कृष्ण के प्रति अतीव प्रेम है और उनसे एक क्षण का भी वियोग उनके लिए लाखों वर्ष के तुल्य बन जाता है। गोपियाँ कृष्ण की सबसे महान् भक्त हैं और कृष्ण के साथ उनकी विशिष्ट लीलाएँ अगले अध्यायों में वर्णित हैं।

इस प्रकार श्रीमद्भागवत के दसवें स्कंध के अन्तर्गत “दावानल का निगला जाना” नामक उन्नीसवें अध्याय के श्री श्रीमद् ए.सी. भक्तिवेदान्त स्वामी प्रभुपाद के विनीत सेवकों द्वारा रचित तात्पर्य पूर्ण हुए।